ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 191-194
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

संस्कृत साहित्य,दलित साहित्य एवम् उपन्यासों में चित्रितनारी

डॉ0 जनार्दन झा
सहायकाचार्य–संस्कृत, राजकीय महिलामहाविद्यालय, सलेमपुर, देवरिया (उ०प्र०), भारत

Received- 10.12. 2021, Revised- 15.12. 2021, Accepted - 19.12.2021 E-mail: drjanardan.jha@gmail.com

सारांशः ***संस्कृत भाषा का साहित्य अनेकानेक अनमोल ग्रंथ– रत्नों का महासागर है। इतना समृद्धशाली साहित्य किसी भी अन्य पुरातन भाषा का नहीं है। किसी दूसरी भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने लंबे समय तक रहने नहीं पाई है। अत्यधिक पुरातन होने पर भी इस भाषा की सृजनात्मक शक्ति कुंठित नहीं हुई। इसका प्रकृति–प्रत्यय हमेशा ही नूतन शब्दों को गढ़ने में समर्थ रहा है। संस्कृत साहित्य में भारतीय आदर्श स्त्रियों का वर्णन अपने आप में एक गौरवमयनिदर्शन है। केवल संस्कृत साहित्य में मनुस्मृति ग्रंथ के छप्पन वें श्लोक में स्त्रियों के संबंध में कहा गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।। जहां स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं और जहां स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है, वहां पर किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।'ये सम्मान से सम्मानित हैं। इनका कुछ भाषाओँ में अनुवाद भी है। फिलहाल पत्रकारिता क्षेत्र में कार्यरत हैं।***

कुंजीभूत शब्द– पुरातन भाषा, अविच्छिन्न प्रवाह, सृजनात्मक शक्ति, प्रकृति– प्रत्यय, संस्कृत साहित्य, गौरवमयनिदर्शन।

याज्ञवल्क्य स्मृति में स्त्री के हीन स्थिति की ओर संकेत किया गया है, किस प्रकार स्त्री की कामुकता को लेकर एक पितृसत्तात्मक समाज की चिंता इन ग्रंथों में दिखाई पड़ती है।[2] वेदों में स्त्री को अत्यंत महत्वपूर्ण, गरिमामय और उत्कृष्ट स्थान प्रदान किया गया है। वेदों में नारी यज्ञीय है अर्थात् यज्ञ समान पूजनीय। वेदों में स्त्री को ज्ञान देने वाली, सुख समृद्धि लाने वाली, विशेष तेजवाली,देवी, विदुषी, सरस्वती, इन्द्राणी, ऊषा जो सबको जगाती है, इत्यादि अनेकानेक आदर सूचक नाम दिए गए हैं।उपनिषद् ग्रंथों में भी विद्वानों के द्वारा असंगत वाक्यों, विचार कणिकाओं इत्यादि पर गार्गी संशोधन पूर्वक संशोधित स्वरूप को सभा के सामने उपस्थापित करती थी। वैदिक काल की नारियों में नेतृत्व क्षमता के साथ साथ उच्च शिक्षा में गहरी पैठ थी।[3]

महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक में शकुंतला को अतुलनीय सौंदर्य मोहक होने के साथ के साथ–साथ नैसर्गिक भी बताया है–'अव्याजमनोहरं वपुः'। महर्षि कण्व के आश्रम की वह मानो साक्षात् वनश्री है। शकुंतला तपस्विनी होकर भी गृहस्थ है। ऋषि कन्या होकर भी प्रेमिका है। शान्ति की गोद में पली होने पर भी चपल है। वह एक नारी है और नारी ह्रदय के प्रेम, उमंग और उच्छ्वास की उसमें पर्याप्त मात्रा है। दुष्यंत की भांति उसके चरित्र का महत्व उसके पतन और उत्थान में है। उसका प्रायश्चित उसके प्रत्याख्यान से प्रारंभ होता है और वह व्रत से पूर्ण होता है। उसका प्रथम प्रेम उद्दाम और प्रबल था। प्रियंवदा और अनुसूया को नायिका शकुंतला की सखियों के रूप में चित्रित किया है।इन दोनों का ही शकुंतला के प्रति निःस्वार्थ प्रेम है। प्रियंवदा अपने नाम के अनुकूल मधुर एवं प्रिय भाषणी है। अनुसूया इन दोनों में अवस्था की दृष्टि से बड़ी है, एवं अधिक चिंतनशील तथा गंभीर है।

सानुमती को मेनका की अप्सरा की एक सखी के रूप में,गौतमी को वृद्ध तापसी, परभृतिका और मधुकरिका को राजा दुष्यंत के उद्यान की रखवाली करने वाली दासियां, वेत्रवती को राजा की प्रतिहारी, चतुरिका को राजा की दासी, अदिति को मारीच ऋषि की पत्नी और देवताओं की माता तथा नटी को सूत्रधार की पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है।[4] 'मेघदूतम्'ग्रंथ में कालिदास के द्वारा यक्षिणी को यक्ष की प्रेमिका के रूप में प्रदर्शित किया गया है।महाकवि कालिदास की पत्नी विद्योतमा का भी चित्रण भी यत्र–तत्र प्राप्तहोता है।[5]

त्रिविक्रमभट्ट विरचित ग्रंथ में दमयंती को मुग्धा नायिका के रूप में कवि के द्वारा दिखाया गया है। विश्व विश्रुत सुंदरी दमयंती जिसकी लावण्य सुधा का पान करने के लिए इन्द्रादि लोकपाल भी लालायित हो जाते हैं। बाल्यकाल में ही वह अनेक विद्याओं तथा कलाओं में निपुणता प्राप्त कर लेती है। पहले वह अपनी किसी पथिक द्वारा राजा नल की अनुपम कीर्ति सुनकर अनुरक्त हो जाती है, परंतु वह अपनी शालीनता को शिथिल नहीं होने देती है। प्रियंगुमंजरी विदर्भ देश के राजा भीम की श्रृंगार की आगार, रमणीयता की पताका, खिली हुई यौवनश्री अंतःपुर की कुलांगनाओं में प्रमुख रानी तथा दमयंती को जन्म देने वाली है। प्रियंवदिका दमयंती की अत्यंत शिष्ट, मृदुभाषिणी तथा सुख–दुख में सदा सहयोग देने वाली प्रियसखी है।[6]

'उत्तररामचरिम्'ग्रंथ में सीता भगवान् राम की धर्मपत्नी हैं। उनको विश्व का भरण पोषण करने वाली भगवती वसुंधरा ने जन्म दिया। सीता देवयज्ञ भूमि से उत्पन्न होने वाली है। सीता तीर्थोदक और वह्नि की तुलना में भी जन्म से ही पवित्र है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

सीता से सारा संसार पवित्र है, सारा संसार सनाथ है। सीता के माहात्म्य को अग्निदेव,मुनिजन, अरुंधती जैसे महान् नारी पात्रों का भी चित्रण इसी ग्रंथ में किया गया है।[7]

महाकवि भारवि द्वारा रचितग्रंथ'किरातार्जुनीयम् में पांचाल नरेश की पुत्री द्रौपदी को एक सम्यक् राजनीतिज्ञ के रूप में दर्शाया गया है।[8] 'स्वप्नवासवदत्तम् नाटक में दो महिला नायिकाओं को महाकवि भास के द्वारा चित्रित किया गया है। रूपयौवन शालिनी अवन्ति देश की राजकुमारी वासवदत्ता नाटक की प्रधान नायिका है। उसमें राजमहिषी के अनुरूप बुद्धिमत्ता एवं संवेदनशीलता है।[9] कवि सुबंधु द्वारा रचित 'वासवदत्ता' ग्रंथ में वासवदत्ता को नायिका के रूप में चित्रित किया गया है।[10] महाकवि शूद्रक द्वारा रचित महान् ग्रंथ'मृच्छकटिकम्' में बहुतायत नारी पात्रों का सजीव चित्रण किया गया है, जिसमें वसन्तसेना, मदनिका,धूता इत्यादि के नाम महत्वपूर्ण है।[11] महाकवि बाणभट्ट विरचित ग्रंथ'कादंबरी' में कई महिला पात्रों को चित्रित किया गया है, उस में भी नायिका कादंबरी का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है।[12] कुमारसंभवम् ग्रंथ में महाकवि कालिदास का बाला पार्वती, तपस्विनी पार्वती,। विनयवती पार्वती, और प्रागल्भ पार्वती आदि रूपों नारी का चित्रण अद्भुत है।इस प्रकार संस्कृत साहित्य और संस्कृत वाङ्मय में अनेकानेक नारियों का महिमा मंडन किया गया है, जिनका विस्तृत वर्णन यहां पर समुचित प्रतीत नहीं होता है।[13] दलित साहित्य में नारी के अध्ययन को हम दो भागों में बांट कर देख सकते हैं। पहला– दलित नारियों की स्थिति पर स्वयं नारियों और दलित लेखकों के दृष्टिकोण से, और दूसरा दलित रचनाओं में चित्रित नारी। बात स्त्रियों से आरंभ करते हैं। दृष्टिकोण का सही पता आत्मवृत्तों से ही पता चलता है, परंतु भारतीय साहित्य में स्त्रियों द्वारा लिखित आत्मवृत्त का घोर अभाव है। यद्यपि 'सीमान्तिनी उपदेश' जैसी कुछ रचनाएं मिल जाती हैं। परन्तु ऐसी गुमनाम लेखिकाओं का पता लगा पाना कठिन कार्य है। सावित्रीबाई के स्त्री विद्यालय से शिक्षित होकर उनके काम करने वाली महिलाओं में फातिमा शेख और मुक्ताबाई का नाम लिया जाता है, परंतु उनकी रचनाएं उपलब्ध नहीं होतीं। महात्मा ज्योतिबा फूलेको 'सत्यशोधक समाज' आंदोलन से आने वाली ताराबाई शिंदे को प्रथम नारीवादी विचारक कहा जाता है, परंतु उनकी कोई भी रचना उपलब्ध नहीं है। 1814 में जन्मी मुक्ताबाई के नवजागरण के उस आरंभिक काल में भारतीय समाज की दुर्दशा पर अपने लेख लिखे, जब वह मात्र 14 वर्ष की बच्ची थी। 1855 में लिखा यह आलेख महाराष्ट्र के 'ज्ञानोदय' समाचार पत्र में छपा था। अपने आलेख में मुक्ताबाई ने पेशवाओं के शासन में दलितों (मांग एवं महार जाति के लोगों) पर ढाए जाते अत्याचार का वर्णन किया था। किस तरह पेशवाओं के जमाने में दलितों को लाल शीशा सिंदूर पिला दिया जाता था और किस तरह उनको हवेलियों की बुनियाद में गाड़ दिया जाता था तथा किस तरह उनकी छाया से भी घृणा की जाती थी।[14]

बाबासाहेब के आंदोलन में स्त्रियों ने खुलकर हिस्सा लिया था। 1924 में स्थापित उनकी 'बहिष्कृत हितकारिणी' सभा में दलित महिलाएं बढ़ चढ़कर भाग लेती थीं। इसमें बेजूभाई भटकर और रंगबाई शुभंकर के नाम विशेष रूप से लिए जा सकते हैं। ये दोनों महिलाएं मंचों से भाषण दिया करती थीं। 1928 में बंबई में महिला मंडल की स्थापना हुई थी, जिसकी अध्यक्ष स्वयं डॉक्टर अंबेडकर की पत्नी रमाबाई थी। 1930 के नागपुर सम्मेलन में हजारों महिलाओं ने भाग लिया। 1942 के अखिल भारतीय दलित महिला सम्मेलन नागपुर में भी हजारों महिलाओं ने शिरकत की। इसमें सुलोचना डोगरे, कीर्ति पटेल, इंदिरा पाटिल इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने सम्मेलन की अध्यक्षता से लेकर विभिन्न दायित्वों को संभाला। बाबासाहेब के आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने वाली प्रमुख महिलाओं में जायबाई चौधरी, तुलसीबाई बनसोडे ('चोखामेला' पत्र के संपादन में पति की सहयोगिनी), मुक्ता सर्वगौड़, मिटमेली कबाड़े, आत्मकथा की लेखिका शांताबाई दाणी इत्यादि के नाम उल्लेखनीय हैं।[15] इन तमाम दलित नारियों ने प्राथमिक तौर पर सवर्ण व्यवस्था के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। उनकी शिकायत पुरुषवादी वर्चस्व से अधिक नहीं थी, जितनी सवर्णवादी व्यवस्था से। दलित स्त्रियों के आरंभिक मराठी रचनाओं में दलित पुरुषों के खिलाफ कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ती।

नारी विमर्श और दलित साहित्य पर सहस्राधिक आज चर्चाएं हो रही हैं। इसलिए प्रथमतः है यह जाने कि दलित साहित्य है क्या? डॉक्टर चमन लाल ने दलित साहित्य को परिभाषित करते हुए कहा"" दलित साहित्य वह साहित्य है जो दलितों के जीवन, उनके सुख–दुख, उनकी सामाजिक, राजनीतिक स्थितियों, उनकी संस्कृति, उनके आस्थाओं–अनावस्थाओं, उनके शोषण उत्पीडन तथा इस उत्पीडन शोषण का दलितों द्वारा प्रतिरोध की परिस्थितियों को व्यापकता तथा गहराई के साथ कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करना"। यह कैसी विडंबना है कि संस्कृत और हिंदी साहित्य के आदि कवि वाल्मीकि दलित जगत् से आते हैं, परंतु संपूर्ण संस्कृत वाङ्मय में दलित दयनीय दशा का निदर्शन कराने वाली इसी ख्याति कवि की कोई वृत्ति ढूंढे नहीं मिलती। हां,पाली– साहित्य अवश्य दलितों के साथ न्याय करता दिखता है, क्योंकि बौद्ध प्रभाव के कारण वहां करुणा विद्यमान है।[16]

दलित साहित्य में नारियों के चित्रण को दो भागों में बांटा जा सकता है– पहला दलित साहित्यकारों द्वारा चित्रित

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

नारी और दूसरी गैर दलित साहित्यकार और विचारों द्वारा चित्रित नारी। दलित साहित्यकारों में जाट सत्ता को लेकर डॉ धर्मवीर के तर्क को देखा जा चुका है। डॉ0 धर्मवीर का साफ मानना है कि दलित औरतें सवर्ण औरतों की तरह परावलंबी नहीं होती। वे कुल मर्यादा के नाम पर घूंघट काढकर घर में नहीं बैठतीं। वे भी पुरुषों के साथ या अकेली घर और बाहर का काम करती हैं। उनके नौकर नहीं होते और होते भी हैं तो वे नौकर नहीं सहायक होते हैं। अपना निर्णय लेने में खुद सक्षम होती हैं तथा पुरुष के नालायक होने या नहीं होने पर अपने जीवन का निर्णय स्वयं ले सकती हैं।[17]

दलित नारियां प्रेमचंद के साहित्य में सर्वाधिक चित्रित हुई हैं। उनके चर्चित नारी चरित्रों में गांगी (ठाकुर का कुआं) बुधिया (कफन) और सिलिया (गोदान) है। गांगी में जो भय और धर्म भीरुता है वह समाज द्वारा सदियों के शोषण और भेदभाव के कारण उत्पन्न हुआ है। सिलिया के माध्यम से सवर्णों द्वारा दलित नारियों से जाट कर्म के विरुद्ध एक समाजशास्त्रीय विमर्श उभर कर सामने आया है, परंतु दलित साहित्यकारों ने प्रेमचंद के तमाम दलित चिंतन को सिरे से खारिज कर दिया है। डॉ धर्मवीर ने प्रेमचंद के खुद के चरित्र और उनके साहित्य में आए जाट कर्म को लेकर उन्हें सामंत का मुंशी कह दिया है। डॉ धर्मवीर लिखते हैं कि" दलित की समस्याओं का वर्णन करने से दलित साहित्य का सृजन नहीं होजाता"। दलित की भूख पीड़ा और त्रासदी के बखान में उसकी इतिश्री नहीं होती। दलित साहित्य का असली सृजनतब होता है जब उसमें दलित का चिंतन आता है। सारे गैर दलित लेखक उसके इसी चिंतन से घबराते हैं। एक प्रेमचंद की अलग से क्या कहीजाए कोई भी अन्य गैर दलित लेखक इसका अपवाद नहीं हो सकता। दलित साहित्य उसे कहा जाएगा जिसमें पारिवारिक जीवन में तलाक की अनुमति हो। जाट कर्मी को जाट कर्म की जिम्मेदारी से नवाजा जाए।[18]

प्रेमचंद के दलित साहित्य को लेकर हिंदी साहित्य की पूरी समाजशास्त्रीय चेतना ही प्रश्नों के घेरे में आ गई है और दलित स्त्रियों की सबसे बड़ी त्रासदी बलात्कार और रखैल बनने की मजबूरी पर तमाम विवाद हुए हैं। जनसत्ता के संपादकीय आलेख "दलित स्त्रियांकिसकी संपत्ति है" में राजकिशोर ने धर्मवीर प्रश्न खड़ा करते हुए उन्हें स्त्रियों के प्रति उदारवादी और दलित अलगाववादी भी करार दिया है।[19]

इस प्रकार दलित साहित्य एवम् उपन्यासों में नारी का विशद् वर्णन मिलता है जिसमें आज के जीवन का यथार्थ भी है, आने वाले कल का संकेत भी है। दलित रचनाओं में दलित नारियों केबलात्कार, वैश्या बनने,भूख, गरीबी इत्यादि के चित्रण के साथ–साथ उनके बहादुरी पूर्ण कारनामों का भी व्यापक वर्णन मिलता है। इस्मत, चुगताई, मृदुला, गर्ग, मैत्रेई, पुष्पा, प्रभा खेतान इत्यादि के लेखन को लेकर कुछ विवाद अवश्य उठे, पर शीघ्र ही सतह पर आ गए। बाद में पुरुषों के द्वारा आगे बढ़कर नारीवादी साहित्य लिखा गया, परंतु दलित साहित्य में नारी पर सवालों की झड़ी लग गई। जाहिरन इसके दो खेमेबने– एक स्त्रियों के, दूसरे पुरुषों के। फिर स्त्रियों में भी दो–दो दल दिखाई देने लगे– एक नारीवादी दूसरी उदारवादी। उसी प्रकार पुरुषों में भी परस्पर विरोधी खेमे हुए। ऐसे अनेक विवाद और विमर्श डॉ धर्मवीर भारती के जाट– सत्ता संबंधी विमर्शों को लेकर पैदा हुए और नारीवादी लेखिकाओं द्वारा डॉ0 धर्मवीर भारती और उसके समर्थकों को स्त्री विरोधी करार दिया गया।[20]

इस प्रकार संस्कृत साहित्य ग्रन्थों में हमने देखा कि अनेकानेक नारियों के द्वारा अपनी– अपनी भूमिकाओं का सम्यक् निर्वहण करते हुए उनके द्वारा किए गए कार्यों का समुचित विवेचन किया गया है।वहीं पर दलित साहित्य ग्रंथों में भी महिलाओं के द्वारा महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहण किया गया है। कोई भी नारी संस्कृत साहित्य का हो, अथवा दलित साहित्य का दोनों ही हमारे लिए आदरणीया, सम्माननीया और पूजनीया है। वह तो साक्षात् देवी स्वरूपा है। आज के परिवेश में महिलाओं के प्रति बढ़ रहाअत्याचारघ निश्चित रूप से चिन्ता का कारण है। लोगों में सामाजिक चेतना, समुचित शिक्षा, जनजागरुकता और महिलाओं को सुशिक्षित, निर्भीक और आत्मनिर्भर बनाकर चिन्ता को समाप्त किया जा सकता है। हमारी सनातन संस्कृति ने हमेशा ही नारियों को समुचित स्थान प्रदान किया है। चाहे वह संस्कृत साहित्य की हो, वैदिक साहित्य की हो, स्मृति साहित्य की हो, दलित साहित्य की हो, या फिर उपन्यासों में चित्रित नारी ही क्यों न हो। "मातृदेवो भव", पितृदेवो भव", "अतिथिदेवो भव", "आचार्यदेवो भव", "राष्ट्रदेवो भव" जैसे समुन्नत वाक्य सर्वप्रथम नारियों को ही सम्मान देते हैं। भारत की प्रतिष्ठा भी संस्कृ त और संस्कृति से ही है। संस्कृत और संस्कृति दोनों ही नारी के बिना अधूरा है। संस्कृत और संस्कृति दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं। नारी के बिना किसी भाषा और संस्कृति की परिकल्पना असम्भव है। उपन्यासों में भी कतिपय रचनाकारों के द्वारा कतिपय नारियों का सशक्त महिमा मंडन प्रदर्शित किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति।
2. याज्ञवल्क्यस्मृति।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

3. वैदिक साहित्य का संक्षिप्त इतिहास।
4. अभिज्ञानशाकुंतलम्।
5. मेघदूतम्।
6. नलचंपू।
7. उत्तररामचरितम्।
8. किरातार्जुनीयम्।
9. स्वप्नवासवदत्तम्।
10. वासवदत्ता।
11. मृच्छकटिकम्।
12. कादम्बरी।
13. कुमारसंभवम्।
14. सुभाष गाताडे का आलेख, 1857: निरंतरता और परिवर्तन, उद्भावना, अंक 75, सं–प्रदीप सक्सेना पृ. 284.
15. दोनों गालों पर थप्पड़: मोहनदास नैमिशराय आधुनिकता के आईने में दलित, सं.– अभय कुमार दुबे,वागी प्रकाशन पृष्ठ 231 से 232 के आधार पर।
16. बजरंग बिहारी तिवारी का आलेख, 'हंस' जुलाई 2000.
17. 'हंस', दलित विशेषांक, अगस्त 2004 ।
18. प्रेमचंद :सामंत का मुंशी, पृष्ठ 63 एवं दलित स्त्रियां किसकी संपत्ति है? 'जनसत्ता' 3 अक्टूबर 2005 ।
19. मिट्टी की सौगंध, लेखक प्रेम कपाड़िया ।
20. जस–तस भई सवेरे, सत्य प्रकाश।

*****